अमृत प्रार्थना
नारायण भगवान से (प्रह्लादजी समान)

हे प्रभु !मुझे आपके किसी भी स्वरुप से नहीं लगता। मैंने सब रुपों में आप की वंदना की, लेकिन आपकी माया से मुझे भय लगता है। अतः आप की माया से मेरी रक्षा करें और मेरी शरणागति स्वीकार करें! स्वीकार करें! स्वीकार करें! ।
इसको एक संकीर्तन के माध्यम से गाएंगे।
(भक्त प्रहलाद ने सब रुपों में कैसे भगवान का दर्शन किया)

श्रीमन नारायण नारायण हरि हरि !
जय जय नारायण नारायण हरि हरि!
ब्रह्मा नारायण नारायण हरि हरि !
जय जय नारायण नारायण हरि हरि !
बोलो नारायण नारायण हरि हरि!
हरि नारायण नारायण हरि हरि !
ब्रह्मा नारायण नारायण हरि हरि !
विष्णु नारायण नारायण हरि हरि !
शिव नारायण नारायण हरि हरि !
लक्ष्मी नारायण नारायण हरि हरि !
दुर्गा नारायण नारायण हरि हरि !
शारदा नारायण नारायण हरि हरि!
सूर्य नारायण नारायण हरि हरि !
चंदा नारायण नारायण हरि हरि!
वायु नारायण नारायण हरि हरि!
अग्नि नारायण नारायण हरि हरि !
जल नारायण नारायण हरि हरि !
सर्व नारायण नारायण हरि हरि !
तेरी लीला सबसे न्यारी न्यारी !
तेरी महिमा प्रभु है न्यारी न्यारी!
हरी नारायण नारायण हरि हरि !
सर्व नारायण नारायण हरि हरि!